सत्य की खोज करना चिर-प्राचीनकाल से मनुष्य का एक पुरुषार्थ रहा है। कुछ लोग तो भौतिक जगत के कार्य-कलापों, क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं और इसकी विविधताओं तथा इसमें की अनेक शक्तियों से सम्बन्ध सत्य सिद्धांतों की खोज में लगे रहे और अन्य कई इस परिवर्तन शील जगत के पीछे अथवा परे छिपे हुए सत्य को जानने के लिए साधना करते रहे। इसलिए संसार में दो प्रकार की विद्याओं का विकास हुआ। एक अपरा विद्या और दूसरी परा विद्या।

सत्य की परिभाषा - सत्य की चर्चा करने से पहले हमें सत्य की इस परिभाषा पर सहमत हो जाना चाहिए कि 'जो चीज जैसी है उसे वैसा ही जानना मानना और बतलाना तथा व्यवहार में लाना ही सत्य है।'

इस परिभाषा के साथ-साथ यहां हम यह बता देना आवश्यक समझते हैं कि जानने के साथ-साथ मानना भी जरुरी हैं क्योंकि यदि सत्य का ज्ञान होने पर भी हम उसे वैसा मानते नहीं हैं तो इससे विदित होता है कि हम उसके विषय में अभी भी हमारे मन में कुछ संशय, संदेह अथवा शंकाएं

सत्य को जानने, मानने और बतलाने के अतिरिक्त सत्य को आचरण अथवा व्यवहार में लाना भी आवश्यक है।

हैं। अत: इन शंका-युक्त प्रश्नों के रहे होने के कारण सत्य के विषय में हमारा ज्ञान या विज्ञान निश्चयात्मक नहीं है। यदि ऐसा है तो फिर वह ज्ञान अथवा सत्य हमारे मन अथवा चरित्र को पूरी शक्ति अथवा पूरा बल प्रदान नहीं करेगा बल्कि हमारे मन में अथवा समाज में द्वंद्व पैदा करने वाला और अवस्था को डावांडोल बनाने वाला होगा। संशयमुक्त ज्ञान हमें कई बार किंकर्त्तव्यविमूढ़ स्थिति में भी ले जाता है और 'क्या करूं और क्या न करूं' तथा 'करूं या न करूं' तथा 'पता नहीं क्या होगा' - इस प्रकार के प्रश्न उत्पन्न करके मन में संघर्ष भी पैदा करता है और मन के मैदान में इन दो प्रश्नों की आपसी मुठभेड़ से संग्राम एवं संघर्ष ही उत्पन्न हुआ रहता है। इसलिए जानने के साथ मानना, पहचानना भी जरूरी है। यही कारण है कि लोग प्राय: सत्य कथन की जब शपथ लेते हैं तो कहते है कि -'जहां तक मैं जानता और मानता हूँ' अथवा 'जहां तक मेरा 'ज्ञान और विश्वास' है, उसके अनुसार मेरा यह कथन है कि.. इस प्रकार वे जानने के साथ-साथ मानने की बात भी व्यक्त करते हैं।

सत्य को जानने और मानने के अतिरिक्त सत्य बतलाना भी आवश्यक है वर्ना यदि हम सत्य जानते और मानते तो है परंतु बतलाते नहीं है तो यह स्थिति इस बात की सुचक है कि अभी हमारे निश्चय या विश्वास में कमी है और इसलिए, हमारे मन में कमजोरी है या इसलिए ही हम डरते हैं कि लोग कहीं हमारी हंसी न उड़ाएं, हमें बेवकुफ न समझें या हमारा साथ न छोड़ दें। इसका तो यह अर्थ होता है कि हम उस सत्य के लाभ को और मूल्य को नहीं जानते और हम ऐसा भी महसूस नहीं करते कि यह तो लोगों को जरूर बताना चाहिए क्योंकि इसमें ही तो उनका भला है, बल्कि हम शायद ऐसा महसूस करते हैं कि यह बताने से लोग बुरा मान जाएंगे और हमें सत्य बताने में लोक-लाज महसूस होती है। यदि हम सत्य के मूल्य को, उसकी कल्याण करने की सामर्थ्य को तथा लोगों को उसे बताए जाने की आवश्यकता को नहीं जानते तब तो हम सत्य को भी यथार्थ रीति से या गहराई से नहीं जानते। सत्य तो संदेह - उच्छेदक, संशय - निवारक शंका-संहारक, संतोषकारक तथा शक्तिदायक होता है। उसके होते भय कहां?

सत्य को जानने, मानने और बतलाने के अतिरिक्त सत्य को आचरण अथवा व्यवहार में लाना भी आवश्यक है वर्ना किसी बात को जानने और मानने के बाद व्यवहार में न लाना तो बुद्धि का विलास मात्र है, आडंबर है और सत्य के लाभ से स्वयं को वंचित करना है। जानकर और मानकर भी उस सत्य पर आचरण न करना तो जान बूझकर सत्य का विरोध करना तथा लोगों को सत्य के प्रति निश्चेष्ट या निरूत्साहित करना है। इस प्रकार सत्य की अवहेलना करना,उसका उल्लंघन करना और एक प्रकार से उसका विरोधी बनना -यह तो वैसे ही है जैसे कानून को जानने के बाद उसे कोई तोड़ता है। यह तो बड़ा अपराध है और इसके लिए तो बड़ा दंड है।

हां, हम आगे चलकर यह बताएंगे कि अपवाद के रूप में कभी-कभी ऐसी परिस्थिति भी आ जाती है कि जब सत्य को व्यवहार में नहीं लाया जा सकता परंतु उसे आचरण में लाया जा सकता है। ऐसी परिस्थिती भी आ जाती है कि जब सत्य को आचरण व व्यवहार में तत्काल अथवा तुरंत नहीं लाया जा सकता बल्कि लोक-कल्याणार्थ उसकी अभिव्यक्ति को स्थगित कर दिया जाता है और फिर भी उसे आचरण में लाया जाता है।

झूठ क्यों नहीं? - पूर्व इसके कि हम इस विषय को आगे बढ़ाएं, हमें तनिक इस बात को भी स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि सत्य हमारे लिए कल्याणकारी और झूठ अकल्याणकारी कैसे है?

पहले हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि झूठ कोई तभी बोलता है जब वह चोरी करता है या अन्य कोई अपराध करने के कारण भयभीत होता है या किसी को धोखा देकर स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है, या बेईमानी पर उतर आता है, या किसी को पता दिए बिना उसे हानि पहुंचाना चाहता है और या वर्गला कर काम निकालना चाहता है। मनुष्य यह सब तभी करता है जब वह दूसरों का अहित करने पर तुला हो और यह व्यवहार वह उनके साथ करता है जिनसे उसे हानि पहुंचने की आशंका हो या जिनसे वह प्यार न करता हो। जिनको वह अपना मित्र समझता है, जिनसे किसी भी प्रकार का उसे भय न हो तथा जिनसे कल्याण होने का उसे पूरा विश्वास हो, उनसे तो वह कभी भी झूठ नहीं बोलता। इसका अर्थ यह हुआ कि झूठ के साथ भय, अपराध, बेगानापन या शत्रुता स्वार्थ-सिद्धि की भावना आदि कई दुर्गुण जुड़े हुए हैं। इन दुर्गुणों के अधीन आत्मा को शांति कहां? ऐसे दुर्गुणों के कारण तो आत्मा का पतन ही हुआ है और होता चला जाता है। झूठ से तो अपने भी बेगाने बन जाते हैं, जिन्हें हम पर विश्वास हो वे कभी हमारे सत्य बोलने पर भी हम में अविश्वास करने लगते हैं और लोगों में हमारी प्रतिष्ठा या साख समाप्त हो जाती है। लोग झूठ वाले व्यक्ति का दोहरा चेहरा मक्कार मन तथा उसके चरित्र को संदिग्ध, व्यवहार को अविश्वसनीय और व्यापार को धोखाधड़ी या ठगी मानने लगते हैं।

इस प्रकार झूठ से न केवल मनुष्य 'दोगला' बन जाता है बल्कि वह समाज में कुरीति, शठ-नीति तथा दुराचार फैलाने का निमित्त बनता है। कलियुग लाने का निमित्त झूठ ही तो है। सबसे पहला झूठ तो स्वंय को 'आत्मा' मानने की बजाए 'शरीर' मानना है परंतु होते-होते झूठ पर झूठ सवार होकर झूठ का इतना बड़ा ढ़ेर हो जाता है कि वह आसमान को जाकर छुता है और समुद्र की सतह तक जाकर पहुंचता है। कायाकला सब झुठ के परिणामस्वरूप चट हो जाती है। जब झूठ का बाजार गर्म होता है तो लोग झूठ को ही सत्य मानने लगते हैं और सत्य को झूठ समझते हैं क्योंकि झूठ को लोग सदा सजा और संवारकर बड़े जोरदार तर्क के साथ उसकी खुब पब्लिसिटी करके पेश करता है। वे यह तो भूल ही जाते हैं कि काठ की हांडी ज्यादा देर तक आग पर नहीं रह सकती और कागज के फूलों से सुगंध नहीं आती। फिर झूठ परिणाम भी झूठा ही होता है। झूठा व्यक्ति सुख के झूठे स्वप्न ही देखता रह जाता है, सच्चा सुख उसके हाथ नहीं आता। वह झूठ और धोखे से साधन इकट्ठा करने में ही जीवन लगा देता है और भय तथा चिंता की अग्नि में स्वयं को जलाता रहता है और फिर भी अपने झूठे मन से मानता है कि मैं सुख-मौज में हूँ। जैसे अंधे के मुंह पर लानत मारने से भी वह समझता है कि यह मुझसे प्यार कर रहा है वैसे ही झूठ से अंधी बुद्धि वाला व्यक्ति यह मान लेता है कि संसार के छह रसों के अतिरिक्त, सबसे अच्छा रस झूठ में है। वह पान को चबाने की तरह झूठ को अपने मुंह में डाले रखता है और झूठे सोने के जेवरों की तरह झूठ श्रृंगार किये रखता है। और कई तो खालिस झूठ का थोक व्यापार करते है, उनके व्यवहार में सत्य की रत्ती भी नहीं होती। वे झूठ के झांसे, दिलासे और पताशे देकर जीवन रूपी व्यापार चलाते हैं। अन्य कई सत्य-मिश्रीत झूठ का प्रयोग करते हैं।

इसका परिणाम यह होता है कि ऐसा व्यक्ति

-शेष पेज 8 पर

भुवनेश्वर। बीजू पटनायक एअरपोर्ट के डायरेक्टर शरद कुमार तथा उनकी परिवार के साथ ब्र.कु.लीना, ब्र.कु.विजय समूह चित्र में।

कुश्मा (नेपाल)। नेपाल के पूर्व महाराज श्री ज्ञानेन्द्र वीर विक्रम शाह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.राधिका।

दिल्ली (कालकाजी)। 'प्रेम की शक्ति' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.शिवानी, ब्र.कु.प्रभा तथा अन्य।

नारनौल। हरियाणा के स्वास्थ्य मंत्री नरेन्द्र सिंह, चन्द्रप्रकाश जी, ब्र.कु.रामनाथ, ब्र.कु.रतना शिवध्वज लहराते हुए।

हालोल। नगरपालिका सदस्य नीतिन शाह, ब्र.कु.डॉ.निरंजना, भारत प्लास्टिक इण्डस्ट्रीज के चेयरमेन लक्ष्मण भाई गुरवाणी, ब्र.कु.सविता व ब्र.कु.नरेन्द्र।

खुर्सीपार (भिलाई)। दीप प्रज्जवित करते हुए विधायक भजन निरंकारी, स्कंद आश्रम के मणिस्वामी जी, ब्र.कु.माधुरी एवं ब्र.कु.नेहा।